RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-05
May-2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[UGC Listed Journal]

कालिदास की दृष्टि में नारी

विपुल कुमार

शोधार्थी–संस्कृत विभाग ल0ना0मि0विश्वविद्यालय,दरभंगा

कालिदास पौराणिक आस्था के कवि थे। महिलाओं के विषय में उनकी दृष्टि वहीं थी, जो उनके युग की थी। कवि की दृष्टि में मूर्ख व्यक्ति ही स्त्री पुरुष में भेद करते हैं भले लोग तो दोनों का समान प्रकार से आदर करते हैं।[1] कुमारसंभव में यह स्पष्ट वर्णित है कि धनी परिवार में पुत्र के समान पुत्रियों का धातृकर्म धायियों द्वारा किया जाता था और पुत्री को परिवार का जीवन माना जाता था।[2] इस समय पुत्रों के समान पुत्रियाँ भी खेल–कूद के द्वारा अपना मनोरंजन किया करती थी।[3] इनका भी पालन–पोषण पुत्र के समान अच्छी प्रकार से किया जाता था।

तत्कालीन समाज में नारी समाज का सशक्त अंग थी उसकी सहभागिता सभी कार्यों में अनिवार्य थी। गृहस्थ आश्रम का प्रमुख आधार पत्नी ही होती थी और है, बिना पत्नी के पुरुष की कोई भी धार्मिक क्रिया सम्पन्न नहीं हो सकती थी, अतएव पति–पत्नी प्रत्येक अवसरों अर्थात् धार्मिक क्रियाओं, उत्सवों आदि पर एक साथ जाया करते थे। यथा– राम सीता के परित्याग के बाद जब अश्वमेध यज्ञ करते हैं, उस समय सीता की स्वर्णमयी मूर्ति अपने वाये भाग में स्थापित करते हैं तभी यज्ञ सम्पन्न हेाता है। हिमालय पार्वती के विवाह के सम्बन्ध में अन्तिम निर्णय मेना से सुनना चाहते हैं।[4] भगवान शंकर ने पार्वती को अपने शरीर की अर्धांगिनी बनाकर नारी गौरव को भारतीय परिपेक्ष्य में स्थापित किया है। नारी का उदात्त रूप इससे अन्यत्र कहीं भी नहीं देखा जा सकता है। समाज में नारी के प्रति वचनबद्धता का पालन समाज का प्रमुख धर्म था, उदाहरणार्थ राजा दशरथ कैकेयी के वचन का पालन करते हुए राम को चौदह वर्ष वनवास देते है।[5] कालिदास ने स्त्री को स्वयं शक्ति रूपा कहा है, इनकी महत्त्वाकांक्षा के आगे पुरुष भी इनका दास हो जाता है। पार्वती के कठोर तप व्रत को देखकर भगवान शिव स्वयं उपस्थित होते हैं तथा अपने को उनका दास कहते है।[6]

कालिदास कालीन समाज में स्त्रियों को विवाह के सम्बन्ध में कुछ स्वतन्त्रता अवश्य थी। उन्हें अपना वर वरण करने का पूर्ण अधिकार था। जहाँ एक ओर रघुवंश के षष्ठ सर्ग में इन्दुमती स्वयंवर में आये हुए अनेक राजाओं में से अपनी इच्छानुसार **अज** का वरण करती है।[7] वहीं दूसरी ओर शाकुन्तल में शकुन्तला दुष्यन्त से गन्धर्व विवाह कर लेती है, जिसको पिता कण्व द्वारा स्वीकृति भी प्रदान कर दी जाती है।

कालिदास की कृतियों के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि तत्कालीन समाज में स्त्रियों की शिक्षा दीक्षा पर अधिक ध्यान दिया जाता था। कालिदास के सभी स्त्री पात्र सुशिक्षित हैं। **'कुमारसंभव'** में पार्वती समस्त विद्याओं का ज्ञान प्राप्त करती है। **'मालविकाग्निमित्र'** में मालविका चित्रकला और संगीत कला का ज्ञान प्राप्त करती है। **'अभिज्ञानशाकुन्तल'** में शकुन्तला और उनकी सखियाँ शिक्षित है। जिनको कण्व ऋषि ने शिक्षा दी थी। स्त्रियाँ विवाहित होने पर पति के साथ मित्र तुल्य रहती थी तथा उनके सभी कार्यों में कन्धे से कन्धा मिलाकर सहयोग करती थी। **'रघुवंश'** में इन्दुमती की मृत्यु हो जाने पर **अज** करुणा पूर्ण वचनों से कहते है–

'गृहणी सचिवः सखी मिथः प्रियशिष्या ललिते कलाविधौ।'[8]

अर्थात् तुम्हीं मेरी धर्मपत्नी, सम्मति देने वाली मन्त्री, एकान्त की सखी और गान आदि ललित कलाओं में प्रिय शिष्या थी। इसी काव्य के उन्नीसवें सर्ग में **अग्निमित्र** की मृत्यु के पश्चात् उनकी विधवा पत्नी का विधिवत् राज्याभिषेक होता है और वह सिंहासन पर बैठकर विश्वासपात्र मन्त्रियों की सम्मति के अनुसार विधिपूर्वक राज्य का संचालन करती है।[9] इससे स्त्रियों की शिक्षा और उनकी योग्यता का उन्नत स्वरूप दृष्टिगत होने के साथ–साथ यह भी स्पष्ट होता है कि विधवा स्त्रियाँ समाज में उपेक्षित न थी। उन्हें अत्यधिक सम्मान की दृष्टि से देखा जाता था। कालिदास कालीन समाज में बहुपत्नी प्रथा प्रचलित थी। शाकुन्तल का **''बहुवल्लभा राजानः श्रुयन्ते''** वाक्य इसकी पुष्टि करता है। शाकुन्तल के षष्ठ अंक में भी बहुपत्नी प्रथा का प्रमाण मिलता है। यहाँ धनमित्र नामक व्यापारी की अनेक पत्नियों का उल्लेख हुआ है।[10] **रघुवंश** में रघु, दशरथ, अतिथि आदि कुछ राजाओं के अनेक पत्नी होने का वर्णन मिलता है। लेकिन इसका तात्पर्य यह नहीं है कि यह प्रथा सर्वसाधारण समाज में थी। सम्भवतः यह राजाओं और उच्च वर्ग के लोगों में ही प्रचलित थी। अनेक राजाओं ने भी एक पत्नी में ही अपनी आस्था प्रकट की है। कालिदास कालीन समाज में पत्नी के रूप में स्त्रियों का बहुत सम्मान था, क्योंकि कवि ने अपनी रचनाओं के माध्यम से बार–बार यह संकेत किया है कि धार्मिक कर्मों का संपादन तभी सफल परिणाम देने के योग्य होता है जब वह सहचरी के साथ किया जाय। कालिदास ने 'अभिज्ञानशाकुन्तल' में पत्नी के ऊपर पति का पूर्ण अधिकार स्वीकार किया है।[11] पत्नी अपने पति की

RRIJM 2015, All Rights Reserved

स्नेह भाजक होती थी। पति उसे बड़े आदर और सम्मान का पात्र समझता था।[12] पत्नी भी अपने पति को आर्यपुत्र नाम से पुकारती थी जिसका अर्थ सम्माननीय या श्वसुर का पुत्र होता है। वह पति के अखण्डित प्रेम के लिए लालायित रहती थी और उसकी सारी श्रृंगार सज्जा पति के एक तृप्त कटाक्ष–पात के लिए होती है।[13] **मेघदूत** में कवि ने प्रोषितभर्तृका यक्षिणी का जिस रूप में वर्णन किया है वह निश्चित रूप से पतिव्रता नारी के आदर्श रूप को उपस्थित करता है। कुबेर शाप के कारण पति से दूर रहने वाली यक्षिणी की जीवनचर्या एक पतिव्रता पत्नी के जीवन का आदर्श प्रतिबिम्ब है। पति से वियुक्त वह यक्षिणी अपने वस्त्रों का कुछ भी ध्यान नहीं रखती है और अपने जंघों पर वीणा रखकर उसके स्वर के साथ अपने स्वामी की महिमा गाने बैठ जाती है। अपनी वीणा पर अनवरत गिरने वाले अश्रु बिन्दुओं को वह किसी प्रकार पोछती है और अभ्यस्त मूर्च्छना को भी भूल जाती है।[14] वह अपने पति के लौटने की अवधि को द्वार पर रखे गये फूलों से गिन रही है या विभिन्न मांगलिक कृत्यों को करने में लगी हुई है। कालिदास के अनुसार इन साधनों का उपयोग प्रोषितभर्तृका स्त्रियाँ वियोग काल में विनोद के लिए किया करती थी।[15]

कालिदास की रचनाओं के अनुशीलन से हमें ज्ञात होता है कि तत्कालीन समाज में सती प्रथा का प्रचलन था। कवि ने **'पतिवर्त्मगा'** वाक्यांश द्वारा सती प्रथा की ओर संकेत किया है।[16] इस उद्धरण से यह नहीं समझना चाहिए कि यह प्रथा समाज में कठोरता के साथ प्रचलित थी। यह पूर्णतः स्वेच्छा पर निर्भर थी, क्योंकि **'रघुवंश'** एवं **'मालविकाग्निमित्र'** में विधवाओं का उल्लेख मिलता है।[17] समाज में इनको सम्मान की दृष्टि से देखा जाता था।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि कालिदास कालीन समाज में स्त्रियों की दशा अच्छी थी। उन्हें समाज में प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त था। कवि के द्वारा नारी समाज का विवेचन तत्कालीन समाज में उनकी जागरूकता और समाज के विकास में उनकी महत्त्वपूर्ण भूमिका को उजागर करता है।

संदर्भ सूचीः–

1. कुमारसंभव 6/85
2. रघुवंश–12/6
3. कुमारसंभव 5/86
4. कुमारसंभव 6/12
5. कन्येयं कुल जीवतं – कुमारसंभव 6/63
6. कुमारसंभव–1/29
7. रघुवंश–6/83
8. रघुवंश–8/67
9. रघुवंश–19/57
10. बहुधनत्वाद बहुपत्नीकेन तत्र भवता भवितत्यम्। अभिज्ञानशाकुन्तल, पृ0 370
11. उपपन्ना हि दारेषु प्रभुता सर्वतोमुखी– अभिज्ञानशाकुन्तल–5/26
12. रघुवंश–10/55
13. स्त्रीणां प्रियालोकफलो हि वेशः। –कुमारसंभव–7/22
14. उत्तरमेघ–26
15. उत्तरमेघ–27
16. कुमारसंभव–4/33
17. रघुवंश, 19/56, मालविकाग्निमित्रम्, भूमिका, पृ0 39

RRIJM 2015, All Rights Reserved